आचार्य आर्यमंक्षु और नागहस्ति

जीवन-परिचय : ये दोनों आचार्य दिगम्बर एवं श्वेताम्बर दोनों परम्पराओं में प्रतिष्ठित हैं। श्वेताम्बर परम्परा में आर्यमंक्षु को आर्यमंगु नाम से उल्लिखित किया गया है। आर्यमंक्षु और नागहस्ति क्षमाश्रमण और महावाचक पदों से विभूषित थे। इन दोनों को सिद्धान्त ग्रन्थों का विशेष ज्ञान था। ये दोनों आचार्य अपने समय के कर्मसिद्धान्त के महान विद्वान और आगम को जाननेवाले थे।

आर्यमंक्षु और नागहस्ति ने गुणधराचार्य के मुखकमल से निकली कषायपाहुड की गाथाओं के समस्त अर्थ को सम्यक प्रकार से ग्रहण किया था। चूर्णिसूत्र रचयिता यतिवृषभ आर्यमंक्षु के शिष्य और नागहस्ति के अन्तेवासी हैं।

गुणधराचार्य ने कसायपाहुड की सूत्रगाथाओं को रचकर स्वयं उनकी व्याख्या करके आर्यमंक्षु और नागहस्ति को पढ़ाया था।

आचार्य आर्यमंक्षु सूत्रों का कथन करनेवाले, उनमें कहे गये आचार को पालनेवाले, ज्ञान और दर्शन गुणों के प्रभावक तथा श्रुतसिद्धान्त को जाननेवाले धीर आचार्य हैं। नागहस्ति व्याकरण तथा कर्म सिद्धान्त को जानने में प्रधान यशस्वी आचार्य रहे हैं। ये दोनों आचार्य सिद्धान्त के मर्मज्ञ, श्रुतसागर के पारगामी और सूत्रों के अर्थ के व्याख्याता थे। आप गुप्ति, समिति और व्रतों के पालन में सावधान तथा परीषह और उपसर्गों के सहन करने में निपुण थे। ये दोनों आचार्य वाचक और प्रभावक भी थे।

डॉ. ज्योतिप्रसादजी ने नागहस्ति की जन्मतिथि ई. सन् 130-132 निर्धारित की है और आर्यमंक्षु को नागहस्ति से पूर्ववर्ती मानकर उनका समय ई. सन् 50 माना है।

ये दोनों आचार्य महावीर स्वामी की परम्परा की 28वीं पीढ़ी पर आते हैं, जिसका अर्थ है कि इनका समय वीरनिर्वाण संवत् सातवीं शताब्दी है।